



कृषि दर्पण

CRDE

ग्रामीण विकास हेतु समर्पित कृषि पत्रिका
सी. आर. डी. ई. कृषि विज्ञान केन्द्र, सेवनिया, तहसील - इछावर,
जिला - सीहोर (म.प्र.)

कृषि से संबद्ध अन्य व्यवसायों को भी अपनाना आवश्यक

निरन्तर देखा जा रहा है कि देश में बहुसंख्यक लघु व सीमान्त कृषको द्वारा परंपरागत कृषि पद्धतियों के अपनाये जाने के कारण उनकी आमदनी में वृद्धि होने की संभावना कम है। परम्परागत कृषि में आय के स्रोत सीमित होने एवं दिनो दिन कृषि आदानों खाद, बीज, दवाइयों आदि की बढ़ती कीमत के कारण कृषकों को वांछित लाभ प्राप्त नहीं हो पा रहा है। हालांकि केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा कृषकों को अनेको प्रोत्साहन व रियायते दी जा रही है ताकि वह बदलते परिवेश में नवीन तकनीकों को अपना सकें।

वर्तमान में समन्वित कृषि की अवधारणा को कृषि आय बढ़ाने में काफी प्रासंगिक और उपयोगी माना जा रहा है, अतः कृषकों विशेषकर युवा कृषको को फसल उत्पादन के साथ-साथ कृषि से संबद्ध अन्य व्यवसायों को समेकित ढंग से अपनाने के बारे में गंभीरता पूर्वक विचार करना पड़ेगा। कृषि से संबद्ध कई ऐसे उद्यम हैं जहां बहुत कम निवेश और श्रम के आय में सकारात्मक बढ़ोत्तरी की जा सकती है।

कृषि से संबद्ध अनेकों ऐसे कृषि उद्यम हैं जैसे- मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन, सुअर पालन, मुर्गीपालन, रेशम कीट पालन, उच्च प्रौद्योगिकी आधारित सब्जी उत्पादन, बीज उत्पादन, बकरी पालन आदि का चयन कृषक के पास उपलब्ध आधारभूत संसाधनों व उनकी रुचि अनुसार चयन किया जा सकता है। मधुमक्खी पालन एक महत्वपूर्ण व्यवसाय लघु व सीमान्त कृषकों हेतु हो सकता है। एक मधुमक्खी बॉक्स से औसतन 40 कि.ग्रा. शहद की प्राप्ति होती है, अगर रु 100 प्रति कि.ग्रा. की दर से विक्रय होता है ता वर्ष में रु. 4000/- प्रति बॉक्स अतिरिक्त आय प्राप्त की जा सकती है। इसी प्रकार मशरूम उत्पादन से भी कम व्यय व श्रम से प्रति वर्ष अतिरिक्त आय अर्जित की जा सकती है। अतः यह कहा जा सकता है कि फसल उत्पादन के साथ-साथ अन्य उद्यम को अपनाकर रोजगार प्राप्त किया जा सकता है किन्तु यह भी आवश्यक है कि ऐसे व्यवसायों को शुरू करने से पूर्व निकटतम कृषि संस्थानों अथवा कृषि विज्ञान केन्द्र से आवश्यक जानकारी और प्रशिक्षण अवश्य प्राप्त कर लेना चाहिए। इस दिशा में युवा कृषकों द्वारा स्वतः पहल व इच्छा शक्ति की आवश्यकता है।

सम्पादक

संरक्षक

डॉ. विजय कुमार,
अध्यक्ष

ग्रामीण विकास एवं पर्यावरण केन्द्र,
170, अरविन्द्र विहार, बागमुगालिया,
भोपाल (म.प्र.)

परामर्श

डॉ. अनुपम मिश्रा,
निदेशक,

कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान,
जोन - IX आई.सी.ए.आर. जबलपुर, (म.प्र.)

प्रकाशक

सी.आर.डी.ई. - कृषि विज्ञान केन्द्र,
ग्राम- सेवनिया, तहसील- इछावर,
जिला- सीहोर, 466115 (म.प्र.)
मोबाईल नं. 07489763338
फैक्स नं. 0755-2480272

संपादक

जैनेन्द्र कुमार कनौजिया

संपादन सहयोग

श्री संदीप टोडवाल, श्री देवेन्द्र पाटील,
श्री दीपक कुशावाहा, श्री धर्मन्द्र,
श्री विमलेश कुमार, श्री मानसिंह बघेल
कु. कुसुम सुखवाल

संकलन एवं ग्राफिक्स

श्री अक्षय कालकर, श्री भानू पाल सिंह



किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम



रबी इंटरफेस



महिला किसान मेला

विगत तीन माह की गतिविधियाँ (जनवरी - मार्च, 2019)

अ. प्रक्षेत्र परीक्षण

क्र.	विषय	कृषक संख्या
1.	ग्रीष्म कालीन मूंग की फसल में पीला विषाणु रोग का समन्वित प्रबन्धन	10

ब. अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	विषय	प्रदर्शन संख्या	क्षेत्रफल (हे.)	कृषक संख्या
1.	फसल उत्पादन	01	2.0	05

स. प्रशिक्षण कार्यक्रम -

कार्यशील कृषक, कृषक महिलाओं एवं ग्रामीण युवाओं हेतु प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि (दिनों में)	प्रशिक्षणार्थी
1.	फसल उत्पादन	01	1-2 दिन	25
2.	उद्यानिकी	02	1-2 दिन	50
3.	फसल सुरक्षा	01	1-2 दिन	25
4.	गृह विज्ञान	02	1-2 दिन	50

द. स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि (दिवस)	प्रशिक्षणार्थी
1.	खाद्य पदार्थों का संरक्षण, भण्डारण एवं मूल्य संवर्धन	01	05	20
2.	उद्यान फसलों में उच्च प्रौद्योगिकी	01	05	10
3.	मधुमक्खी पालन	01	05	20

य. विस्तार अधिकारियों हेतु प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि (दिवस)	प्रशिक्षणार्थी
1.	सब्जी फसलों की संरक्षित खेती	01	01	30
2.	आहार, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता	01	01	25

र. अन्य विस्तार गतिविधियाँ -

क्र.	गतिविधि का नाम	संख्या	प्रतिभागी
1.	प्रक्षेत्र दिवस	18	518
2.	रबी अभियान और कृषक सेमिनार	01	476
3.	समूह बैठक	02	40
4.	फिल्म शो	03	80
5.	किसान सम्मान निधि कार्यक्रम का सीधा प्रसारण	01	250
6.	महिला किसान मेला / अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस	01	727
7.	प्रदर्शनी	04	350
8.	वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों के प्रक्षेत्रों का भ्रमण	47	485
9.	कृषकों द्वारा केन्द्र का भ्रमण	-	4396
10.	कीटनाशकों के सुरक्षित और विवेकपूर्ण उपयोग पर किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम	01	350
11.	विश्व जल दिवस	01	25
12.	स्वच्छता अभियान	04	32



प्रक्षेत्र दिवस



ग्रामीण युवा महिला प्रशिक्षण

आगामी तीन माह की गतिविधियाँ (अप्रैल से जून, 2019)

अ. प्रक्षेत्र परीक्षण -

क्र.	विषय	कृषक संख्या
1.	सोयाबीन की फसल में अकुरुण के पूर्व खरपतवारनाशी (डाइक्लोसुलाम / 26 ग्राम ए.आई./हेक्ट.) के प्रभाव का आंकलन	10
2.	खरीफ मौसम में मक्का की किस्म प्रताप हायब्रिड मक्का 3 का आंकलन	10
3.	वेस्ट-डी कम्पोजर का आंकलन	10
4.	सोयाबीन- चना फसल चक्र में समन्वित पोषक तत्व प्रबन्धन का आंकलन	10
5.	खरीफ प्याज में समन्वित खरपतवार प्रबन्धन तकनीक का आंकलन	10
6.	लघु कृषकों की आय दोगुना करने हेतु आई. एफ. एस. मॉड्यूल का आंकलन	10
7.	टमाटर फसल में पत्ती कुड़चन रोग हेतु समन्वित रोग प्रबन्धन का आंकलन	10
8.	कद्दूवर्गीय फसलों में फल मक्खी कीट प्रबन्धन हेतु समन्वित रोग प्रबन्धन का आंकलन	10
9.	मृगियों में गर्मी के तनाव को कम करने के लिए इलेक्ट्रोलाइट के उपयोग का आंकलन	06
10.	बाजरा एवं लोबिया हरे चारे का दुधारा भैंस के उत्पादन क्षमता पर प्रभाव का आंकलन	05
11.	वर्ष भर हरा चारा उत्पादन व गोबर का केचुआ खाद के रूप में उपयोग	10

ब. अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	विषय	तकनीकों की संख्या	क्षेत्रफल (हे.)	कृषक संख्या
1.	फसल उत्पादन	01	4.0	10
2.	उद्यानिकी	03	3.3	15
3.	मृदा विज्ञान	02	6.0	20
4.	फसल सुरक्षा	01	4.0	10
5.	गृह विज्ञान	01	-	10

स. प्रशिक्षण कार्यक्रम- कार्यशील कृषक, कृषक महिलाओं एवं ग्रामीण युवाओं हेतु प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि (दिनों में)	प्रशिक्षणार्थी
1.	फसल उत्पादन	03	01-02	75
2.	उद्यानिकी	05	01-02	125
3.	मृदा विज्ञान	04	01-02	100
4.	फसल सुरक्षा	04	01-02	100
5.	कृषि प्रसार	02	01-02	50
6.	गृह विज्ञान	03	01-02	75
7.	पशुपालन	02	01-02	50

द. विस्तार अधिकारियों हेतु प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1.	पशुओं में संतुलित आहार का प्रबंधन	01	01	25
2.	ग्रामीण सहभागिता अध्ययन	01	01	25
3.	खरीफ फसलों में पोषक तत्व प्रबंधन	01	01	25
4.	खरीफ फसलों की उत्पादन तकनीकी	01	01	25
5.	पोषण अजीविका सुरक्षा के लिए गृह वाटिका	01	01	25

य. स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षण -

क्र.	विषय	संख्या	अवधि (दिवस)	प्रशिक्षणार्थी
1.	प्लांट क्लिनिक	01	05	20
2.	केचुआ खाद उत्पादन	01	05	10
3.	वस्त्र की रूपरेखा एवं सिलाई	01	05	20

र. अन्य विस्तार गतिविधियाँ -

क्र.	गतिविधि	संख्या	प्रतिभागी
1.	प्रक्षेत्र दिवस	01	40
2.	विधि प्रदर्शन	02	40
3.	खरीफ इन्टरफेस	01	50
4.	समूह बैठक	02	40
5.	पूर्व प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन	01	30
6.	वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों के खेतों का भ्रमण	23	-
7.	वैज्ञानिक सलाहकार समिति बैठक	01	30
8.	मृदा स्वास्थ्य शिविर	01	50
9.	पशु स्वास्थ्य शिविर	01	40
10.	किसान मोबाईल संदेश	21	-
11.	विश्व पर्यावरण दिवस	01	60
12.	दूरदर्शन वार्ता	02	-
13.	कृषि लेख	02	-

सोयाबीन फसल उत्पादन के महत्वपूर्ण बिन्दु :-

► किस्में –

नाम	अवधि (दिनों में)	उत्पादन (कुं./है.)	विशेषतायें
जे. एस. – 2029	95	20–25	वाई. एम. वी. चारकोल रोट प्रतिरोधी व कीट सहनशील
जे. एस. – 2034	86	20–22	चारकोल रोट, गर्डल बीटल एवं तना मक्खी
जे. एस. – 2069	92	20–25	चारकोल रोट वाई. एम. वी. पोड क्लास्ट प्रतिरोधी
जे. एस. – 9560	85	20–22	पोड क्लास्ट, कॉलर रॉट, गर्डल बीटल, एवं तना मक्खी के प्रति प्रतिरोधी
आर. वी. एस. – 2001 –4	95–100	20–25	अधिक एवं कम पानी में उपयोग

► बीज दर, बुवाई का समय एवं पौध अंतरण :-

बीज दर	– 75 किग्रा./हैक्टर
बुवाई	– 20 जून से 05 जुलाई
कतार से कतार दूरी	– 45 सेमी.
पौध से पौध की दूरी	– 05 सेमी.

► बीज उपचार :-

बीज हमेशा उपचारित करके बोयें, ऐसा करने से कीट एवं बीमारियों का प्रकोप कम होगा एवं उत्पादन भी बढ़ेगा।

❖ कार्बोक्सिन 37.5 + थायरम 37.5 की 3 ग्राम मात्रा/किग्रा. बीज अथवा ट्राईकोडरमा की 5 ग्राम मात्रा /किग्रा. बीज से उपचारित करें।

❖ जैव उर्वरक (एन. पी. के.) कन्सोटिया 5 मिली/किग्रा. बीज से उपचारित करें।

नोट : उपचारित बीज छायादार स्थान पर सुखाकर तुरंत बोनी करें।

► अन्तरवर्तीय फसले :-

- 1) सिंचित क्षेत्र में सोयाबीन की 4 कतारों के बाद 02 कतार मक्के की बोयें (सोयाबीन + मक्का 4:2)।
- 2) वर्षा आधारित क्षेत्र में सोयाबीन की 4 कतारों के बाद 02 कतार अरहर फसल की लगायें (सोयाबीन + अरहर 4:2)।

► ध्यान रखने योग्य प्रमुख सुझाव :-

- ❖ ब्राड बेड रिज फरो मशीन से बुवाई करें।
- ❖ बुवाई से पूर्व बीज अंकुरण का परीक्षण अवश्य करें।
- ❖ अन्तरवर्ती फसल लगायें, जिससे अधिक लाभ प्राप्त होता है।
- ❖ कीट व बीमारियों तथा खरपतवारों का समेकित प्रबन्धन करें।

ग्रीष्म कालीन गहरी जुताई

ग्रीष्म कालीन गहरी जुताई करने हेतु रिवर्सिबल प्लाऊ (पलटी प्लाऊ) का उपयोग किया जाता है। ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई का कार्य किसान भाई अप्रैल माह में करें।

ग्रीष्म कालीन गहरी जुताई के महत्वपूर्ण लाभ –

- भूमि में पड़े जीवांश पदार्थ मिट्टी में अच्छी प्रकार से मिल जाते हैं। तथा जल्दी जीवांश पदार्थ अपघटन होने से मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ की मात्रा बढ़ जाती है।
- गहरी जुताई से भूमि की वर्षा जल को अवशोषण करने की क्षमता में

वृद्धि होती है। जिससे वर्षा जल का संरक्षण होता है।

- खरपतवारों के बीज नीचे चले जाते हैं। जिससे उनका जमाव नहीं हो पाता। एवं कुछ बीज, कंद एवं जड़े भूमि की उपरी सतह पर आ जाते हैं एवं सूर्य की तेज धूप में नष्ट हो जाते हैं।
- फसलों पर लगने वाले कीड़ों के अंडे तथा लार्वा नीचे दबकर मर जाते हैं। तथा कुछ भूमि के उपर आकर अधिक गर्मी में नष्ट हो जाते हैं।
- मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक गुण बने रहते हैं।
- भूमि भुरभुरी एवं ढीली हो जाती है। जिससे फसलों की जड़े गहराई तक आसानी से जाकर जमीन में फैल जाती है तथा पोषक तत्वों को अधिक क्षेत्र से ग्रहण कर लेती है।
- मृदा के कटाव की भी रोकथाम होती है।
- मृदा ताप तथा वायु संचार फसलों की बडवार अनुसार व्यवस्थित रहता है।
- समस्याग्रस्त भूमि में सुधार होता है।
- लाभदायक जीवाणुओं की क्रियाशीलता बढ़ जाती है। जिससे उपज में वृद्धि होती है।

नरवाई ना जलाये-

गेहूँ फसल की कटाई के पश्चात अवशेष (नरवाई) के लिए किसानों को सलाह दी जाती है की वे नरवाई को जलाने के स्थान पर उसे रोटावेटर से मिट्टी में मिलाए जिससे यह जैविक खाद में परिवर्तित होकर खेत को लाभ पहुंचाये। विगत वर्षों का अनुभव रहा है कि किसान भाई कटाई के पश्चात फसल अवशेष (नरवाई) को जला देते हैं। जिससे अग्नि दुर्घटना होने की आशंका के साथ-साथ भूमि में उपलब्ध आवश्यक तत्व जलकर नष्ट हो जाते हैं। भूमि कठोर हो जाती है। जिससे भूमि की जल धारण क्षमता कम होकर फसले जल्दी सूखती है। इससे अतिरिक्त पर्यावरण प्रदूषण तापमान में वृद्धि होना एवं खेत की मेढ के पेड़ पौधों व फल वृक्ष आदि जलकर नष्ट हो जाते हैं।

वेस्ट डीकम्पोजर

वेस्ट डीकम्पोजर देशी गाय के गोबर से अलग किये गये लाभकारी सूक्ष्म जीवाणु से बनाया गया उत्पाद है जो फसल अवशेष, खरपतवार, गोबर और जैव अपशिष्ट को तेजी से बढ़ोत्तरी कर अपघटन द्वारा खाद में परिवर्तित कर देता है एवं फसलों में पर्णय छिड़काव करने पर फसलों को हानि पहुंचाने वाले कीटाणुओं की संख्या को भी नियंत्रित करता है।

वेस्ट डीकम्पोजर की विशेषताएँ:-

- जैव अपशिष्ट को जैविक खाद में परिवर्तित करने वाली लाभकारी तकनीक।
- कम लागत (20 रुपये प्रति बोतल)।
- खाद बनाने में किसी भी प्रकार की मानक संरचना और आवश्यक मानकों की जरूरत नहीं होती है।
- लम्बी जीवन अवधि (03 वर्ष)
- सरल और विश्वसनीय
- सभी फसलों हेतु प्रभावी।

वेस्ट डीकम्पोजर का व्यापक बहुलीकरण:-

- 02 कि.ग्रा. गुड़ लेकर इसे 200 लीटर पानी से भरे प्लास्टिक ड्रम में मिला ले।

- वेस्ट डीकम्पोजर की एक बोतल ले और इसमें उपस्थित सामग्री को गुड़ घुले 200 लीटर पानी के ड्रम में डाल दे।
- वेस्ट डीकम्पोजर को अच्छी तरह घोलने के लिए लकड़ी की सहायता से ठीक तरह से मिलाएँ।
- एक कार्डबोर्ड द्वारा ड्रम को ढंक दे और प्रतिदिन इसे सुबह-शाम 02 बार हिलाये।
- उपरोक्त प्रक्रिया 5 से 7 दिन तक दोहराए, इससे सम्पूर्ण घोल वेस्ट डीकम्पोजर में परिवर्तित हो जाता है।
- उपरोक्त निर्मित वेस्ट डीकम्पोजर घोल से बार-बार डीकम्पोजर घोल को बना सकते हैं इसके लिये 20 लीटर वेस्ट डीकम्पोजर घोल को 02 कि.ग्रा. गुड़ के साथ ड्रम में मिलाकर 200 लीटर तक पानी भर दें, फिर से 07 दिनों में डीकम्पोजर का घोल तैयार हो जायेगा।

वेस्ट डीकम्पोजर से खाद तैयार करने की विधि:-

- एक टन जैव सामग्री - खरपतवार, फसल अवशेष, गोबर आदि की 18-20 सेमी मोटी परत का ढेर बना ले।
- वेस्ट डीकम्पोजर के घोल के साथ जैव सामग्री को गीला कर दे।
- पुनः जैव सामग्री की 18-20 सेमी मोटी परत का ढेर लगाये और वेस्ट डीकम्पोजर के घोल से पुनः गीला कर दे।
- कम्पोस्टिंग की अवधि के दौरान 60 % नमी बनाये रखे यदि आवश्यकता हो तो घोल मिला दे।
- समान कम्पोस्टिंग के लिये हर 07 दिनों के अन्तराल पर ढेर को उलट-पुलट करते रहें और इस ढेर पर हर बार वेस्ट डीकम्पोजर का घोल डालते रहे।
- कम्पोस्ट खाद 40-50 दिनों के बाद उपयोग करने के लिये तैयार हो जाता है।

❖ तैयार खाद की पहचान:-

वेस्ट डी कम्पोजर के उपयोग से तैयार होने वाली खाद, सूखी, गहरे भूरे रंग की और गंध रहित होती है। यह गर्म भी नहीं होती और बहुत अच्छी गुणवत्तायुक्त होती है जो उच्च जैविक कार्बन की मात्रा और अन्य पोषक तत्वों से भरपूर होती है।

वेस्ट डीकम्पोजर के अन्य उपयोग:-

- रोग प्रबन्धन- विभिन्न फसलों में फफूंद, जीवाणु और विषाणु सम्बन्धी बीमारियों के नियंत्रण के लिये 1:4 के अनुपात में पानी के साथ मिलाकर खड़ी फसल में 20 दिन में 01 बार छिड़काव करने पर फसलों में लगने वाली बीमारियों से बचाव होता है।
- बीज उपचार- फसलों के बीज पर डी कम्पोसर घोल का छिड़काव कर 30 मिनट के लिये छायादार स्थान पर सुखायें, इससे बीज जनित रोगों का नियंत्रण होता है।

मिट्टी परीक्षण

मिट्टी परीक्षण कब ?

1. मिट्टी परीक्षण कभी भी करा सकते हैं लेकिन रबी फसल की कटाई उपरान्त सबसे उपयुक्त समय होता है।
2. साधारणतया तीन वर्ष में एक बार
3. सामान्यता फसल की कटाई हो जाने पर तथा खेत में खाद एवं उर्वरक डालने से पूर्व।

मिट्टी परीक्षण क्यों ?

1. मिट्टी में उपलब्ध पोषक तत्वों की मात्रा ज्ञात हो जाती है।

2. मिट्टी की उपजाऊ शक्ति के अनुसार खादों एवं उर्वरकों की सही अनुशंसा के लिये।
3. खेत की उपजाऊ शक्ति व मृदा के स्वास्थ्य को बनाये रखने में सहायक।
4. समस्याग्रस्त मृदाओं में सुधार हेतु।

अपने खेत की मिट्टी का परीक्षण कैसे कराये। -

1. एक खेत से लगभग 6-8 स्थानों से मिट्टी का नमूना ले।
2. नमूना लेने वाले स्थान की उपरी सतह से खरपतवार एवं फसल अवशेष को साफ कर ले व नमूना लेने वाले स्थान पर "वी" (V) आकार का 6 इंच (15 से.मी.) गहरा गड्ढा बनाये।
3. खुर्पी की सहायता से गड्ढे की दीवार से ऊपर से नीचे तक एक इंच मोटी मिट्टी की परत काट ले तथा मिट्टी को तगारी में एकत्रित कर लें।
4. एक खेत में सभी जगह से ली गयी मिट्टी को एक जगह मिलाकर एक संयुक्त नमूना बना ले। मिट्टी से अन्य अवांछित पदार्थों को अलग कर ले।
5. संयुक्त नमूने को लकड़ी से पीटकर महीन कर लें एवं अच्छी तरह मिलाये। अब इस नमूने को गोलाई में फैलाकर चार बराबर भागों में बाट ले।
6. आमने सामने के दो भागों की मिट्टी रखकर शेष मिट्टी अलग कर दे। बची मिट्टी को फिर से अच्छी तरह मिलाकर चार भागों में बाट दे तथा दो भागों की मिट्टी रख ले, शेष अलग कर दे। यह प्रक्रिया तब तक दोहराते रहे जब तक लगभग आधा किलो मिट्टी न हो जाये।
7. सूचना पत्र में जानकारी भर कर तैयार मृदा नमूने को मृदा परीक्षण प्रयोगशाला, कृषि विज्ञान केन्द्र सेवानिया जिला सीहोर या अपने निकटतम प्रयोगशाला में परीक्षण हेतु भेजें।

मिट्टी नमूना लेते समय ध्यान रखने योग्य बातें -

1. नमूना जहां तक संभव हो खाली खेत से ले।
2. ढलान के अंत या गड्ढे से नमूना न ले।
3. मेड़ों के पास से तथा वृक्षों के नीचे से नमूना न ले।
4. सिंचाई की नालियों के पास से नमूना न ले।
5. उर्वरक और गोबर की खाद रखे स्थान के पास से नमूना न ले।
6. सूक्ष्म पोषण तत्व (लोहा) के परीक्षण हेतु नमूना लेते समय स्टेनलेस स्टील या लकड़ी से बने औजारों का ही उपयोग करे।
7. नमूने के साथ दिये जाने वाले जानकारी पत्रक को साफ साफ भरे।

कद्दू वर्गीय सब्जियों में कीट एवं रोग प्रबंधन

प्रमुख कीट

1. फल मक्खी - यह एक गंभीर कीट है जिसके कारण फसल में 70-80 प्रतिशत तक नुकसान देखा गया है। अधिकतम नुकसान जुलाई-अगस्त माह के दौरान होता है। मादा, सफेद सिंगार के आकार के अण्डे गुदे में छेद करके देती है व मैगट टेड़ी मेड़ी सुरांग बनाकर फल को अंदर से खाती है जिसके कारण फल सड़ जाते हैं व खोखले होकर परिपक्व होने से पहले ही गिर जाते हैं।

प्रबंधन - प्रोफेनोफॉस 40 प्रतिशत ई.सी. + साइफरमेथीन 4 % ई.सी. दवा की 400 मिली मात्रा को 150-200 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें एवं फल मक्खी ट्रैप 4 नग/एकड़ लगाये।

2. ककड़ी कीट (डेफनिया इंडिका) - लार्वा के शरीर के दोनो

तरफ सफेद धारियां होती है। सुड़ी इकट्ठी होकर पतियों के क्लोरोफिल भाग को कुतर कर जालनुमा कर देती है।

जैसे ही फल बनना चालू होते हैं लार्वा खा जाता है।

प्रबंधन — क्लोरोपाईरीफास 40 % ई.सी. + साईपरमेथ्रिन 4 % दवा की 400 मिली मात्रा को 150–200 ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

3. लाल पम्पकिन बीटल — यह कद्दूवर्गीय फसल को प्रमुख कीट है इस कीट का ग्रब पौधों की जड़ों को खाता है तथा प्रौढ़ पत्तियों को नुकसान पहुंचाते हैं यह कीट लाल रंग का होता है।

प्रबंधन — डाईक्लोरोवांश (डीडीबीपी) 76 % ई.सी. का 200 मिली प्रति एकड़ के मान से छिड़काव करें अथवा ट्राईक्लोरोफेन 50 ई.सी. 400 मिली प्रति एकड़ के मान से छिड़काव करें।

4. सफेद मक्खी — यह कीट पौधों की पत्तियों एवं कोमल भागों से रस चूसते हैं एवं वायरस जनित रोगों को फैलाते हैं।

प्रबंधन — ईमिडाक्लोप्रिड 17.8 % एस.एल. की 50 मि.ली. दवा प्रति एकड़ के मान से छिड़काव करें एवं पीला चिपचिपे ट्रेप 10 नग/एकड़ लगायें।

5. लीफ मार्इनर — इस कीट का लार्वा पत्तियों में टेड़ीमेड़ी सुरागें बनाता है। गंभीर प्रकोप के कारण पत्तियां सुखकर गिर जाती हैं।

प्रबंधन — ईमिडाक्लोप्रिड 17.8 % एस.एल. की 50 मि.ली. दवा प्रति एकड़ के मान से छिड़काव करें।

6. लाल मकड़ी — यह पौधों की पत्तियों का रस चुसती है।

प्रबंधन — डाईकोफोल 18.5 प्रतिशत एस.सी. 600 मि.ली. प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

प्रमुख रोग -

1. सर्कोस्पोरा लीफ स्पॉट — इस रोग में छोटे गोलाकार धब्बे जो बीच से स्लेटी कलर के होते हैं पत्तियों पर दिखाई देते हैं। बरसात के मौसम में संक्रमण अधिक होता है।

प्रबंधन — थायोफिनेट मेथाईल 70 डब्ल्यू.पी. की 400 ग्राम मात्रा को 100–200 ली. पानी में छोल बनाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

2. फ्यूजेरियम विल्ट — इस रोग के लक्षण फूल एवं फल अवस्था पर दिखाई देता है। पूरा पौधा पीला होकर सूख जाता है। व मुरझा जाता है।

प्रबंधन — कार्बेन्डाजीम 50 डब्ल्यू.पी. 120 ग्राम प्रति एकड़ के मान से छिड़काव करें।

3. चूर्णिल आसिता — सफेद पाउडर जैसी विकसित फफूंद पत्तियों, तनों और लताओं पर आसानी से पहचानी जा सकती है।

प्रबंधन — अजोक्सीट्रोबीन 23 % 200 मि.ली. या साइमोक्सनिल 8 % + मेनकोजेब 64 % 500 ग्राम प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

4. एन्थोक्नोज — पीले रंग के पानी से भीगे धब्बे दिखाई देते हैं जो बाद में सुखे काले भूरे रंग के होकर चौड़े छेद जैसे दिखाई देते हैं।

प्रबंधन — थायोफिनेट मेथाईल 70 डब्ल्यू.पी. की 400 ग्राम मात्रा प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

5. जीवाणु झुलसन — कोमल पत्तों पर गहरे हरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं जिसके चारों ओर पीले रंग का रिंग दिखाई पड़ता है।

प्रबंधन — अजोस्ट्रोबीन 23 % का 200 मि.ली. प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

पशुओं के मुख्य संक्रामक रोग, लक्षण व रोकथाम

पशुओं में संक्रामक रोगों का प्रकोप अधिक होता है जिस कारण पशुपालकों को आर्थिक क्षति उठानी पड़ती है। संक्रामक रोगों में कुछ

रोग ऐसे होते हैं जिनका यदि शुरुआत अवस्था में उपचार नहीं किया गया तो पशु का बचना मुश्किल हो जाता है ऐसी स्थिति में डेरी फॉर्म के प्रबंधन में उपचार से बचाव की नीति उपयोगी रहती है। संक्रामक रोगों से पीड़ित पशुओं की चिकित्सा भी महंगी पड़ती है। इन रोगों से पीड़ित पशु यदि उपचार से जिन्दा बच भी जाते हैं तो भी उनके उस ब्यांत के दूध की मात्रा में अत्यंत कमी हो जाती है।

गलघोटू (एच. एस.)

- **स्थानीय नाम:** घुर्रका, घुड़का
- **रोग का कारण:** यह संक्रामक रोग जीवाणु के द्वारा होता है।
- **संक्रमण:** दूषित पानी व चारों के द्वारा फैलता है। बीमार पशु के स्वस्थ पशु के संपर्क में आने से भी फैलता है।
- **रोग प्रकोप का समय:** मई, जून, जुलाई, अगस्त, सितम्बर।
- **लक्षण:**

◆ अचानक तेज बुखार आता है, आँखें लाल हो जाती हैं और पशु कापने लगता है। पशु खाना-पीना व जुगाली करना बंद कर देता है।

◆ दूधारू पशुओं में अचानक दूध उत्पादन घट जाता है।

◆ पशु के जबड़ों और गले के नीचे सूजन आ जाती है तथा साँस लेने में कठिनाई होती है और घुर्र-घुर्र की आवाज आती है।

◆ जीभ सूज जाती है बाहर निकल आती है तथा लगातार लार टपकती रहती है।

◆ रोगी पशु में उपरोक्त लक्षण दिखाई देने के 1–2 दिन के भीतर ही उसकी मृत्यु हो जाती है।

• रोकथाम:-

◆ इस बीमारी की रोकथाम के लिये वर्षा ऋतु से पहले (मई- जून में) प्रतिवर्ष टीकाकरण करवाना चाहिए।

◆ रोगी पशु को स्वस्थ पशु से अलग रखें तथा दाना, चारा, पानी भी अलग रखें।

◆ मृत पशु द्वारा छोड़े गये चारों वे दाने को जलाकर नष्ट कर दें।

◆ पशु आवास को जीवाणु नाशक (लालदवा) के घोल से धोना चाहिये।

• **उपचार:** कलमीशोरा, नौसादर, कपूर व सोंठ को गुड़ में मिलाकर रोगी पशु को खिलाए तथा अजवाइन की धूनी दें, तुरन्त नजदीकी पशु चिकित्सक से सम्पर्क करें।

लंगडी बुखार (ब्लेक क्वार्टर)

- **स्थानीय नाम:** लंगडिया, चुर्चरिया, फड- सूजन
- **रोग का कारण:** यह जीवाणु से होने वाला संक्रामक रोग है। यह रोग तीन वर्ष तक के पशुओं में अधिक होता है।
- **संक्रमण:** दूषित चारागाहों पर स्वस्थ पशुओं के चरने से इस बीमारी का जीवाणु घास द्वारा पशुओं में प्रवेश कर जाता है। यदि पशु के शरीर पर कोई घाव या खरोच हो तो इनसे भी जीवाणु शरीर में प्रवेश कर पशु को बीमार कर देते हैं।
- **रोग प्रकोप का समय:** वर्षा ऋतु व उसके बाद।
- **लक्षण:** अचानक तेज बुखार आता है। पिछले पुट्टों पर सूजन आती है, जो कि छूने से गर्म लगती है। सूजन में दर्द होता है।

• रोकथाम:

◆ इस रोग की रोकथाम के लिये मई- जून में टीकाकरण करायें।

◆ स्वस्थ पशुओं को उन चारागाहों से दूर रखना चाहिए, जहाँ रोग का संक्रमण हुआ हो।

- **उपचार:** रोग की प्रारम्भिक अवस्था में प्रोढ़ पशुओं को पेनिसिलीन और एण्टी लंगड़ी का इंजेक्शन दिया जा सकता है, नजदीकी पशु चिकित्सक से सम्पर्क करें।

जहरी बुखार (एन्थ्रेक्स)

- **स्थानीय नाम:** गिल्टी, विशहरी, चक्कर की बीमारी।
- **रोग का कारण:** यह जीवाणु से होने वाला रोग है।
- **संकमण :** एक पशु से दूसरे पशु में तथा पशुओं से मनुष्यों में भी फेलकर उसके लिये प्राणघातक हो सकता है।
- **रोग प्रकोप का समय :** गर्मियों में तथा वर्षा ऋतु के बाद।
- **लक्षण:**
 - ◆ तेज बुखार, पैरों का लंडखडाना, शरीर में कंपकपी, चक्कर काटके जमीन पर गिरना, शरीर में सूजन व एकाएक पशुओं की मृत्यु होना, मृत्यु के बाद पशु के शरीर का तेजी से फूलना और उसकी नाक, मुंह तथा गुदा से कोलतार जैसा काला झागदार रक्त बहना।

रोकथाम:

- ◆ रोगी पशु को तत्काल ही स्वस्थ पशुओं से अलग कर देना।
- ◆ इस रोग की रोकथाम के लिए मई- जून में टीकाकरण कराये।
- ◆ संक्रमित चारे एवं दाने को जलाकर नष्ट करें।
- ◆ मृत पशु की खाल न उतारने दे और उसके शव को दूर ले जाकर गड्डे में गाड़ दें, पशु आवास को 10 प्रतिशत एन.ए.ओ.एच. से धोयें।
- **उपचार:** रोग की आशंका होते ही स्थानीय पशु चिकित्सक से इलाज शुरू कर देना चाहिए अन्यथा पशु को बचाने का समय ही नहीं रहता है।

गर्मी के मौसम में दुधारु पशुओं की देखभाल

हमारा देश एक कृषि प्रधान देश है तथा यहाँ पशुपालन कृषि का एक महत्वपूर्ण अंग है। हमें अपने पशुओं की उत्पादकता के स्तर को बढ़ाने के लिए उनकी उचित देखभाल की आवश्यकता है, विशेषकर गर्मी के दिनों में। गर्मी के दिनों में जब आस-पास के वातावरण का तापमान सामान्य तापमान से अधिक हो जाता है, ऐसी स्थिति में पशु के शरीर का तापमान भी उसके सामान्य तापमान से अधिक हो जाता है जिस कारण पशुओं में निम्नलिखित लक्षण दिखने लगते हैं-

- दैनिक आहार में कमी (8-12% तक)
- दूध उत्पादन में कमी (10-25% तक)
- दूध में वसा की कमी
- पशु के शरीर का सामान्य से अधिक तापमान
- प्रतिरक्षा प्रणाली में कमी
- प्रजनन क्षमता में कमी

गर्मियों के कारण पशुओं की शारीरिक क्रियाओं पर दिखने वाले बदलाव

1. स्वसन गति बढ़ जाती है, पशु हाफने लगता है एवं मुह से लार गिरने लगती है।
2. अधिक लार गिरने से बाइकार्बोनेट आयनों का क्षरण होता है जिससे रूमेन में तेजाबीपन (एसिडासिस) की सम्भावना बढ़ जाती है।
3. पाचन शक्ति कमजोर पड़ जाती है तथा रूमेन में किण्वन की प्रक्रिया भी कमजोर हो जाती है।
4. दैनिक आहार में शुष्क पदार्थ की मात्रा काफी कम हो जाती है जिससे दुग्ध उत्पादन प्रभावित होता है।
5. पानी की आवश्यकता बढ़ जाती है।
6. शरीर के तापमान को सामान्य बनाए रखने के लिए रक्त का प्रवाह

त्वचा पर बढ़ जाता है एवं आंतरिक अंगों में रक्त का प्रवाह कम हो जाता है।

पशुओं के स्वास्थ्य एवं दुग्ध उत्पादन को सामान्य बनाए रखने के लिए निम्न बातें ध्यान रखनी चाहिए-

1. पशुओं को सीधी धूप एवं लू से बचाए।
2. पशुओं को छाँव एवं हवादार स्थान पर रखें तथा आस-पास वृक्ष होने चाहिए।
3. पशुओं को हरा चारा अवश्य खिलाएँ।
4. पशुओं को संतुलित आहार दें।
5. साफ एवं ताजा पानी पर्याप्त मात्रा में हमेशा उपलब्ध रहना चाहिए।
6. दुधारु पशुओं से दूध निकालने के बाद ताजा पानी अवश्य पिलाएँ।
7. अधिक गर्मी की स्थिति में पशुओं को दिन में एक-दो बार अवश्य नहलाएँ।
8. कम स्थान में अधिक पशुओं को न रखें।
9. यदि पशु में गर्मी के कारण असामान्य लक्षण नजर आते हैं तो नजदीकी पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

सामायिक सलाह

अप्रैल माह के कृषि कार्य

अ) फसलें-

गेहूँ व चना- फसलों की गहाई करने के उपरांत उचित ढंग से भण्डारण करें। थ्रेसर पर कार्य करते समय वांछित सावधानियां बरतें। अनाज भण्डारण की कोठियों को भली भांति साफ सफाई कर लें तथा इन्हें मिथाईल पैराथियान नामक दवा से उपचारित करें। भण्डारण हेतु ई डी बी एम्यूल की 1 कैप्सूल प्रति क्विंटल की दर से उपयोग करें।

मूंग एवं उर्द - ग्रीष्म कालीन मूंग एवं उर्द की बुआई के पश्चात् फसल की आवश्यकता अनुसार सिंचाई करें। इन फसलों में पीलामोजेक रोग की रोकथाम हेतु इमिडाक्लोरोप्रिड 17.8 एसएल की 50 मिली दवा का प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। वर्तमान समय में यदि मूंग की बुआई कर रहे हों तो मूंग की पीला रोग सहनशील किस्में जैसे हम-1, हम-12, हम-16, पी डी एम- 139 आदि किस्मों का बुआई हेतु चयन करें व थायोमिथाक्साम 70 डब्ल्यू एस की 3 ग्राम मात्रा से प्रति किग्रा बीज का उपचार करें।

गन्ना- फसल की आवश्यकतानुसार सिंचाई करें व फसल को खरपतवार मुक्त रखें।

ज्वार, बाजरा, मक्का - चारे के लिये विभिन्न फसलों की बुआई का कार्य पूर्ण करें। फसल की आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। फसल जब 50-55 दिन की हो जाये तब प्रथम कटाई करें।

गेहूँ, चना, मटर आदि फसलों की कटाई के उपरांत खेतों से मृदा परीक्षण हेतु नमूने एकत्र कर जाँच कराये। इसके पश्चात् गर्मी की गहरी जुताई करें।

(ब) सब्जियाँ एवं फल -

टमाटर, बैंगन - गर्मियों की फसल के लिये पौध रोपाई के 30 दिन व 50 दिन बाद संकर किस्मों में 45 किग्रा नत्रजन एवं देशी किस्मों में 30 किग्रा नत्रजन का प्रति हे. की दर से उपयोग करें।

फल भेदक कीट की रोकथाम हेतु क्यूनॉलफॉस 25 ईसी की 1.25 मिली दवा को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

प्याज - फसल को रससूचक कीटों व झुलसा रोग रोकथाम हेतु इण्डोफिल एम - 45 की 2 ग्राम दवा व इमिडाक्लोप्रिड 1 मिली दवा की प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार फसल की सिंचाई व खुदाई का कार्य करें।

लहसुन — फसल की खुदाई करके खुला मौसम होने पर इसे 2 से 3 दिनों तक खेत पर सूखने दें तथा बाद में इसे छाया में सुखाकर भण्डारण कर दें।

भिड़ी — आवश्यकतानुसार फसल की सिंचाई करें तथा बुआई के 30 दिन बाद 30-40 किग्रा नत्रजन का प्रति हे. की दर से उपयोग करें। तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें तथा पीतसिरा रोग की रोकथाम हेतु मेटासिस्टाक्स की 1 से 1.5 मिली मात्रा का प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

कद्दूवर्गीय फसलें — तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें तथा आवश्यकतानुसार फसल की सिंचाई व निराई गुड़ाई करें।

फलों में — फल वृक्षों जैसे आम, अमरुद, आंवला, कटहल आदि की आवश्यकतानुसार सिंचाई व निराई गुड़ाई करें।

अमरुद, बेर फल वृक्षों की कटाई छटाई करें। फल वृक्षों के थालों की सफाई करें। आम में भनुगा कीट की रोकथाम हेतु सेबिन 0.2 प्रतिशत का छिड़काव करें।

पशुपालन — पशुओं में खुरपका — मुहँपका रोग का टीका लगवा लें। चारे हेतु फसलों की बुआई का कार्य पूर्ण करें। ग्याभिन बछड़ियों को अतिरिक्त आहार दें, व 40 ग्राम खनिज लवण प्रतिदिन खिलायें। पशुओं में अन्तः परजीवी कीड़ों की रोकथाम हेतु कृमी नाशक दवा पिलायें। गर्मी से बचाव हेतु दुधारु पशुओं को प्रतिदिन नहलायें।

मई माह के कृषि कार्य

अ) फसलें

गेहूँ और चना — गेहूँ और चना के बीज की सफाई कर उसे ठीक प्रकार से सुखाकर अच्छी तरह से भण्डारित करें। अनाज को भण्डारित करने हेतु अनुसंशित दवाओं का उपयोग करें। पूर्व भण्डारित अनाज की समय-समय पर जांच करते रहें। खरीफ फसलों की तैयारी का कार्य जैसे खाद बीज एवं बीजोपचार की योजना बनायें।

मूंग एवं उर्द — फसलों की आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। पीलीपत्ती रोग की रोकथाम हेतु इमिडाक्लोरोप्रिड 1 मिली का प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

मक्का, ज्वार — आवश्यकतानुसार फसल की सिंचाई करें तथा चारे हेतु तैयार फसल की पहली कटाई करें।

गन्ना — गर्मियों में 8-10 दिन अंतराल पर सिंचाई करें तथा माह के अंत तक खाद की अनुसंशित मात्रा फसल को दें।

ब) सब्जियों एवं फल

बैंगन, टमाटर, मिर्च — फसलों की आवश्यकतानुसार सिंचाई व निराई गुड़ाई करें। तैयार फलों को समय से तोड़कर बाजार भेजें। टमाटर व बैंगन फसल में फल भेदक कीट की रोकथाम हेतु क्यूनॉलफॉस 25 इसी की 1.25-1.5 मिली दवा को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

मिर्च फसल में पत्ती सिकुड़ने / विषाणु रोग की रोकथाम हेतु इमिडाक्लोरोप्रिड या मेटासिस्टाक्स की 1 मिली मात्रा का प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

प्याज व लहसुन — प्याज व लहसुन फसल की खुदाई एक सप्ताह पूर्व पत्तियों को जमीन की सतह पर झुका दें जिससे इनकी कंद सख्त हो जायें। इसके उपरान्त इनकी छोटी-छोटी गठरियां बनाकर नमी रहित स्थान पर 10-15 दिन तक सुखाने के उपरांत भण्डारित करें।

कद्दूवर्गीय सब्जियाँ — तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। फसलों में आवश्यकतानुसार सिंचाई व निराई गुड़ाई का कार्य पूर्ण करें। फल मक्खी कीट की रोकथाम हेतु जहरीला चारा (20 मिली मैलाथियान 50

इसी 200 ग्राम चीनी या गुड़ को 20 लीटर पानी में मिलायें) का उपयोग जगह जगह खेत पर रखें।

फलों में — नया बाग लगाने हेतु फलों व उनकी किस्मों के अनुसार खेत का रेखांकन कर गड्डों की खुदाई करें। अमरुद फल वृक्ष में फल नियंत्रण हेतु कटाई छटाई का कार्य पूर्ण करें। कटहल फल वृक्ष में फल विलगन रोग की रोकथाम हेतु ब्लाईटाक्स 50 की 0.5 प्रतिशत के घोल का छिड़काव करें व तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें।

पशुपालन — पशुओं को हे अथवा सायलेज खिलाएं। तीन माह से तीन वर्षों तक के पशुओं को एक टंगिया या चुरचुरा रोग के टीके लगवाएं।

पशुओं को स्वच्छ पीने के पानी की व्यवस्था करें व अधिक गर्मी से बचाने के उपाय करें। गलघोंटू रोग के टीके लगवायें। पशुओं को एन्थेन्स रोग से बचाव हेतु टीकाकरण करें।

जून माह के कृषि कार्य

अ) फसलें

सोयाबीन — जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम सप्ताह तक बुवाई का कार्य पूर्ण करें। सोयाबीन की बुवाई कतार में कूड़ व मेंड़ विधि से करें तथा बुवाई के समय खाद व बीज को एक साथ मिलाकर न बोयें। बुआई हेतु बीज की अनुसंशित मात्रा का ही उपयोग करें। बीज की गुणवत्ता की जांच हेतु बीज का अंकुरण परीक्षण करें। सोयाबीन बीज की बुवाई 45 सेमी पंक्ति से पंक्ति की दूरी व 3 से 5 सेमी पौध से पौध की दूरी पर करें। बुवाई से पूर्व बीज को फफूंद नाशक दवा, कीटनाशक दवा तथा सबसे अंतः में जैव उर्वरकों से उपचारित कर बुआई करें।

धान — जून माह के दूसरे पखवाड़े से रोपाई का कार्य शुरू कर दें। चौड़ी पत्ती व मौथा खरपतवार की रोकथाम हेतु पायराजॉ सल्यूशन की 25 ग्राम मात्रा का प्रति हे. की दर से रोपाई के तीन से पाँच दिन बाद छिड़काव करें।

मूंग व उर्द — मूंग फसल की कटाई 70 से 80 प्रतिशत फलियाँ पकने पर तथा उर्द की कटाई पूरी फसल पकने पर करें।

अरहर — अरहर फसल की बुआई हेतु बीज दर 20 किग्रा. प्रति हे. की दर से उपयोग करें, तथा 30X60 सेमी. पर लंबी अवधि की किस्मों की बुवाई करें।

गन्ना — आवश्यकतानुसार फसल की सिंचाई व निराई गुड़ाई करें। गन्ने में पाइरिल्ला कीट का प्रकोप दिखाई पड़ने पर क्यूनॉलफॉस 25 इसी की 1.5 लीटर मात्रा का प्रति हे. की दर से उपयोग करें। अगोला बेधक, तना बेधक व जड़ बेधक कीट की रोकथाम हेतु कार्बोथूरान 3 जी की 25 किग्रा मात्रा या फॉरेट 10 जी की 20 किग्रा मात्रा का प्रति हे. की दर से उपयोग करें।

ब) सब्जियाँ एवं फल

टमाटर, मिर्च एवं बैंगन — फरवरी मार्च माह में रोपी गई फसल से तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। आवश्यकतानुसार फसल की सिंचाई व निराई व गुड़ाई करें। जुलाई अगस्त में रोपाई हेतु पौध शाला में बीज बुआई का कार्य पूर्ण करें। पकी मिर्च तोड़कर सुखा लें।

प्याज और लहसुन — सुखाई हुई कंदों को नमी रहित स्थान पर भण्डारित करें तथा समय समय पर भण्डार कक्ष का अवलोकन कर खराब हुई कंदों को भण्डार कक्ष से बाहर करें।

कद्दूवर्गीय फसलें — खरीफ ऋतु की फसल लेने हेतु कद्दूवर्गीय फसलें जैसे तोरई, लोकी, कद्दू, खीरा आदि की बुआई का कार्य पूर्ण करें।

केन्द्र द्वारा संचालित गतिविधियां



अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन



कृषकों द्वारा केन्द्र का भ्रमण



प्रक्षेत्र दिवस



प्रक्षेत्र परीक्षण



डॉ.अनुपम मिश्रा, निदेशक, क्षेत्रीय परियोजना संचालक, जोन-9, जबलपुर द्वारा प्रक्षेत्र अवलोकन



स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षण



स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षण



अधिकारी प्रशिक्षण



विश्व जल दिवस

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रेषित किसान मोबाईल संदेश अवश्य पढ़ें।

पुनः जानकारी हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र के दूरभाष क्रमांक +91 7489763338 एवं टोल फ्री नं. : 1800 180 1551 पर संपर्क करें।

बुक पोस्ट

प्रेषक -

प्रमुख,

सी. आर. डी. ई. कृषि विज्ञान केन्द्र

सेवनिया, तहसील- इछावर,

जिला- सीहोर (म.प्र.)

प्रति

.....

